GOKHLE MEMOGIAL GIRL'S COLLEGE

13/15

Prerna 6/7/22

GOKHALE MEMORIAL GIRLS' COLLEGE
ESTD 1938

CLASS-2nd SEMESTER

SUB-HINDI

DEPARTMENT-HINDI

PAPER-CC-2-4

YEAR-1

Gokhale Memorial Girls' College Kolkata

Authenticated.
Principal
Gokhale Memorial Girls' College

::Submitted By::

NAME – PRERANA MISHRA 04 MAR 2023

COLLEGE ROLL-BAH/21/0024

UNIVERSITY ROLL- 212013-11-0001

UNIVERSITY REG.NO- 013-1211-0005-21

REX

INDEX

SL No.	TOPICS	PAGE
	निराला	
1.	निराला जी का परिचय	1-2
2.	निराला जी की काव्य की विशेषताएँ	3-6
3.	निराला की सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि	7-9
4.	महत्व, अवदान एवं हिन्दी साहित्य में स्थान	10-11
5.	निष्कर्ष	12
6.	संदर्भ	13

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - परिचय

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1897 ई० में बंगाल के
महिषादल राज्य में हुआ था। उनके पिता उत्तर-प्रदेश के उन्नाव जिले
के गढ़कोला ग्राम के निवासी थे, किन्तु आजीविका के लिए बंगाल चले गए
थे। ढाई वर्ष की आयु में उन्हें माता की गोद से वंचित होना पड़ा और
उनके पालन-पोषण का भार उनके पिता के कंधों पर आ पड़ा।

'निराला' की प्रारम्भिक शिक्षा महिषादल में हुई। संस्कृत, बंगला और
अंग्रेजी का अध्ययन उन्होंने घर पर ही किया। चौदह वर्ष की उम्र
में उनका विवाह मनोहरादेवी के साथ सम्पन्न हुआ। वे साहित्य और
संगीत में रुचि रखती थीं। उनकी प्रेरणा से ही निराला जी लेखन
में प्रवृत्त हुए।

बाईस वर्ष की उम्र में निराला जी की पत्नी का निधन हो गया,
जिससे वे अति खिन्न हुए। महिषादल की नौकरी छोड़कर उन्होंने
'समन्वय' और 'मतवाला' का सम्पादन किया। निराला जी गरीबी एवं
कष्टों में पिसपिसकर विक्षिप्त हो गए तथा सन् 15 अक्टूबर,
1961 ई० में उनका देहावसान हो गया।

Gokhale Memorial Girls' College Kolkata
Authenticated.
Principal
Gokhale Memorial Girls' College
04 MAR 2023

रचनाएँ एवं कृतियाँ :-

निराला जी बहुमुखी प्रतिभा वाले साहित्यकार थे। कविता के
अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध, आलोचना और
संस्मरण भी लिखे हैं। उनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं - 'परिमल',
'गीतिका', 'अनामिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'अपरा',
'बेला', 'नये पत्ते', 'आराधना', 'अर्चना' आदि। गद्य रचनाओं में
'लिली', 'चतुर-चमार', 'अलका', 'निरुपमा' आदि श्रेष्ठ गद्य-रचनाएँ हैं।

साहित्यिक परिचय :-

मूलत: वे कवि थे और छायावाद के प्रमुख प्रवर्तकों में से एक थे। उनकी कविता में विषय की विविधता और नवीन प्रयोगों की बहुलता है। श्रृंगार, रहस्यवाद, राष्ट्रप्रेम, प्रकृति-वर्णन के अतिरिक्त शोषण और वर्गभेद के विरुद्ध विद्रोह, शोषितों एवं दीन-हीन जन के प्रति सहानुभूति तथा पाखण्ड और प्रदर्शन के प्रति व्यंग्य उनके काव्य की विशेषताएँ हैं।

भाषा शैली :-

'निराला' जी की दो शैलियाँ स्पष्ट हैं - एक, उत्कृष्ट छायावादी गीतों में प्रयुक्त लम्बी समस्त पदावलीयुक्त, तत्सम-बहुला, गहन विचारों से ओत-प्रोत शैली और दूसरी सरल, प्रवाहपूर्ण, प्रचलित उर्दू के शब्द लिए व्यंग्यपूर्ण और चुटीली शैली। भाषा पर निराला जी का पूर्ण अधिकार था। उन्होंने परिमार्जित साहित्यिक खड़ीबोली में रचनाएँ की हैं।

उनकी रचनाओं में आग है, पौरुष है और है सड़ी-गली परम्पराओं के प्रति विद्रोह। कुल मिलाकर निराला जी हिन्दी के क्रान्तिकारी-कवि थे। वर्ण्य-विषय, भाषा, भाव, शैली, छन्द, अलंकार, गति, लय आदि की दृष्टि से निराला जी का काव्य अत्यन्त निराला है।

काव्य की विशेषताओं

पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के महान कवियों में से एक हैं। महाकवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत और निराला छायावाद की वृहत्-त्रयी के रूप में जाने जाते हैं। उनका व्यक्तित्व और साहित्य बहुआयामी है। श्री नरेन्द्र शर्मा के शब्दों में वह आधुनिक कवियों में अपनी शैलीगत आधुनिकता के कारण आधुनिकतम, किन्तु वेदान्त, दर्शन तथा वीर पूजा सम्बन्धी भावना के कारण पुरातन बने रहे हैं। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना, देश-प्रेम, मानवतावाद, असहाय एवं दीनों के प्रति करूणा और शोषणवादी व्यवस्था के विरुद्ध आक्रोश है। उनके काव्य की निम्नलिखित द्रष्टव्य हैं :-

1) विद्रोह एवं स्वच्छन्दता का स्वर :-

छायावादी काव्य में प्राचीनता और परम्परा के विरूद्ध विद्रोह की भावना तथा स्वच्छन्दता का स्वर मुखर है। निरालाजी के काव्य में छायावाद की यह विशेषता अधिक स्पष्ट है क्योंकि वे अन्य छायावादी कवियों की अपेक्षा अधिक विद्रोही और स्वच्छन्दतावादी थे। 'वर दे वीणावादिनी वरदे' कविता में उन्होंने अपनी इस प्रवृत्ति को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है :-

"नव गति नव लय ताल छन्द नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्र रव
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर नव स्वर दे।"

Kolkata

2) देश प्रेम एवं राष्ट्रीय चेतना :-

छायावादी काव्य को जो लोग पलायनवादी काव्य मानते हैं वे बहुत भूल में हैं। प्राय: सभी छायावादी कवियों ने देश प्रेम और राष्ट्रीय चेतना सम्बन्धी कविताएँ लि" हैं। इस दृष्टि से निराला का काव्य अधिक सशक्त है। उनके काव्य में देश प्रेम की उदात्त अभिव्यक्ति हुई है।

उसमें स्वदेश और समाज के जागरण की उत्कट इच्छा और सब प्रकार की पराधीनता से मुक्ति की प्रबल आकांक्षा है। यथा:-

"योग्य जन जीता है,
पश्चिम की उक्ति नहीं-
गीता है, गीता है -
स्मरण करो बार-बार
जागो फिर एक बार
तुम हो महान, तुम सदा हो महान,
है नश्वर यह दीन भाव, कायरता, कामपरता।
ब्रह्म हो तुम
पदरज भर भी है नहीं
पूरा यह विश्वभार
जागो फिर एक बार।

3) प्रेम और सौन्दर्य की अभिव्यक्ति:-

छायावादी काव्यधारा में प्रेम और सौन्दर्यानुभूति का प्राधान्य है। निरालाजी प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। उनके प्रेम और सौन्दर्य संबंधी काव्य में सुरवद तन्मयता, पवित्रता और आत्मतुष्ट करनेवाली अनुभूति है, विलास या वासना नहीं। यथा -

"धीरे - धीरे फिर बढ़ा चरण, बाल्य की केलियों का प्रांगण
कर पार, कुञ्ज तारुण्य सुघर आई, लावण्य भार थर-थर
काँपा कोमलता पर ...,
ज्यों मालकोश नव वीणा पर।

4) प्रकृति के प्रति प्रेम:-

छायावादी काव्य में प्रकृति के प्रति गहरा आकर्षण और प्रेम दिखाई देता है। सभी छायावादी कवियों ने प्रकृति के मनोरम चित्र अंकित किए हैं। निरालाजी ने प्रकृति को चेतन सत्ता के रूप में स्वीकार करके, उसे मानवीय परिस्थिति का एक रूप माना है। प्रकृति का अधिकांश वर्णन उन्होंने स्थल - प्रसंगो के रूप में किया है।

संध्यासुन्दरी, बादल राग आदि कविताओं में उन्होंने प्रकृति के रूप, रंग, ध्वनि, गंध, स्पर्श के बीच संवेदनीय अनुभवों एवं मानसिक संवेगों के उतार-चढ़ाव को वाणी दी है। संध्या-सुन्दरी कविता में प्रकृति कविता में प्रकृति का मानवीय रूप दर्शनीय है -

"दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुन्दरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर-मधुर हैं उसके दोनों अधर
किन्तु जरा गंभीर - नहीं है उनमें हास-विलास।

5) अप्रस्तुत विधान :-

अप्रस्तुत योजना (अलंकार योजना) में कविवर निराला अत्यन्त निपुण हैं। उन्होंने सबसे अधिक उपमा, रूपक, समासोक्ति, मानवीकरण आदि अलंकारों को अपनाकर अत्यन्त सुन्दर, प्रभावशाली और हृदयहारी चित्र अंकित किए हैं। उपमा अलंकार का यह उदाहरण दर्शनीय है जिसमें संध्या को परी के समान कहा गया है -

"दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुन्दरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।"

6) आत्माभिव्यक्ति का स्वर :-

छायावादी काव्य में कवियों ने निजी अनुभूतियों, हर्ष विषाद, उत्साह-निराशा आदि को अभिव्यक्त किया है। निरालाजी ने भी निजी संघर्ष, द्वन्द्व, प्रेम, विराग, हताशा, सफलता-असफलता, उदासी आदि को व्यक्त किया है। प्रेम के साथ उनकी कविताओं में दुःख, व्यथा, जर्जरता, पराजय, पीड़ा, अवहेलना एवं व्यर्थता-बोध की झलक मिलती है। उनकी कविता में मृत्यु-बोध और

और प्रार्थना - अर्चना को एक साथ देखा जा सकता है। मैं अकेला, ठूँठ, स्नेह निर्झर बह गया है, राम की शक्ति पूजा सरोज स्मृति आदि कविताओं में व्यक्तिगत भावनाएँ प्रकट हुई है। यथा -

(i) मैं अकेला
देखता हूँ, आ रही
मेरे दिवस की सांध्यवेला।

पके आधे बाल मेरे,
हुए निष्प्रभ गाल मेरे,
चाल मेरी होती आ रही
हट रहा मेला। — मैं अकेला

7) नवीन छन्दों का प्रयोग :-

निराला प्रयोगशील कवि होने के कारण नित्य -निरन्तर नये छन्दों का प्रयोग करते रहे। उन्होंने छन्द मुक्त और मुक्त छन्द वाली कविताएँ लिखीं। उन्होंने विषम मात्रिक, सममात्रिक, सान्त्यनुप्रास युक्त एवं स्वच्छन्द छन्द वाली सब प्रकार की कविताएँ लिखकर अपनी प्रखर काव्य प्रतिभा का प्रमाण दिया है। यथा -

(i) अन्त्यनुप्रास युक्त कविता -
वरदे, वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव, अमृत - मंत्र नव
भारत में भर दे।

निराला की सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि

कविवर 'सूर्यकान्त त्रिपाठी' निराला हिन्दी के युगान्तरकारी कवि हैं तथा छायावादी कवि चतुष्टय में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कविता में नवजागरण का सन्देश है प्रगतिशील चेतना है तथा राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है। मानव की पीड़ा, परतन्त्रता के प्रति तीव्र आक्रोश उनकी कविताओं में है तथा अन्याय एवं असमानता के प्रति विद्रोह की भावना उसमें सर्वत्र है। निराला की प्रमुख रचनाएं हैं — अनामिका, परिमल, अपरा, गीतिका, बेला, नए पत्ते, आदि।

निराला की रचनाओं में आक्रोश एवं विद्रोह की प्रधानता है जिसे डॉ. रामविलास शर्मा ने ओज और औदात्य कहा है। परिस्थितियों के घात-प्रतिघात ने उन्हें उद्बुद्ध, सचेत एवं जागरूक कवि के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। अन्याय, अत्याचार एवं असमानता के विरुद्ध वे जीवन भर संघर्ष करते रहे। मानव की पीड़ा ने उनके संवेदनशील हृदय को करुणा प्लावित कर दिया था। उच्च वर्ग की विलासिता एवं निम्न वर्ग की दीनता को देखकर वे अपने हृदय में गहन वेदना, टीस एवं छटपटाहट का अनुभव करते थे। सामाजिक विषमता के विरुद्ध वे प्रभावी आवाज उठाते रहे। उनके काव्य का मूल स्वर क्रान्तिकारी एवं मानव कितना दयनीय बन गया है उसकी अभिव्यक्ति निम्न पंक्तियों में हुई है:

"चाट रहे जूठी पतल वे कभी सड़क पर खड़े हुए।
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी अड़े हुए।"

'बादल राग' कविता में कवि बादल से यह अनुरोध करता है कि वह विश्व के धनिक वर्ग पर अपने प्रचण्ड वज्र घोष से आतंक स्थापित करे और विप्लवकारी गर्जना करे। कृषकों के प्रति भी कवि को सहानुभूति है। बादलों का आवाहन करता हुआ वह कहता है कि हे वीर बादलो! तुम भारत के इन दीन-हीन किसानों की पुकार को सुनकर यहाँ विप्लव मचाने के लिए अवश्य पधारो। कवि की

इन क्रान्तिकारी भावनाओं से यह बोध होता है कि कवितर निराला सामाजिक विषमता को दूर करके सामाजिक समता स्थापित करना चाहते थे। पूंजीपतियो को वे आइना दिखाकर कहते है कि तुम्हारी यह रंगो आब' चमक-दमक गरीबो के शोषण पर आधारित है। ऐसे पूंजीपतियों को वे प्रतीकात्मक शैली में फटकारते हुए कहते है:-

"अबे सुन बे गुलाब।
भूल मत, जो पाई खुशबू रंगो आब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपेटलिस्ट।"

निराला जी के काव्य में सामाजिक विषमता के प्रति तीव्र आक्रोश सर्वत्र दिखाई देता है। 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताएं गरीबों के प्रति सहानुभूति से भरी हुई हैं। इस पंक्तियों में सहज रूप में हुई है:

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा छिन्न तार
देख कर कोई नहीं
देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं
सजा सहज सितारा।"

निराला एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं जो शोषण मुक्त हो, जहां अन्याय एवं अत्याचार के लिए कोई स्थान न हो। वे समता, स्वतन्त्रता, न्याय के समर्थक थे और समाजीक विषमता को हर स्तर पर समाप्त करना चाहते थे।

भारतीय समाज में 'विधवा' की स्थिति कितनी दयनीय है, इसकी अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी 'विधवा' शीर्षक कविता में की है:

वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा-सी
वह दीप शिखा-सी शान्त भाव में लीन
वह क्रूर ताण्डव : स्मृति रेखा-सी
वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन

दलित भारत की ए विधवा ए।

भारत की विधवा नारी अपने आधार तरु से अलग पड़ी सुकुमार लता के समान दीन-हीन एवं दयनीय होती है।

निराला ओज और औदात्य के कवि हैं। भारत की परतंत्रता के प्रति वे जनता को जागरूक करना अपना परम कर्तव्य मानते हैं। 'जागो फिर एक बार कविता' में उन्होंने भारतीय वीरों को अंग्रेज रूपी गीदड़ो का सफाया कर देने का आह्वान किया है।

निराला की कविताओं मे पूंजीपतियों के प्रति आक्रोश एवं सामाजिक विषमता के प्रति विक्षोभ विद्यमान है। वे जनता को क्रान्ति के लिए प्रोत्साहित करते हैं। गंगा किनारे बैठे रहने वाले निठल्ले साधु-संन्यासियो के प्रति जनता की श्रद्धा-भक्ति पर वे करारा व्यंग्य करते हैं।

निराला की दृष्टि से तत्कालीन जीवन का कोई दृश्य छूटा नहीं है। अपने व्यंग्यो से उन्होंने तत्कालीन सामाजिक चेतना को झकझोरने का प्रयास किया है। कभी वे सामंतवादी व्यवस्था पर प्रहार करते हैं तो कभी जमीदारों और अंग्रेजों के अत्याचार का पर्दाफाश करते हैं।

इस विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि निराला ने 'जगत एवं जीवन' में व्याप्त विसंगतियो पर करारे प्रहार किए हैं। वे विचारों से क्रान्तिकारी एवं दीन-दुखियों के समर्थक कवि हैं। शोषकों, साम्राज्यवादियों एवं पूंजीपतियों के प्रति उनके मन में आक्रोश है। वे शोषण के विरोधी हैं। राष्ट्रभक्ति, स्वातन्त्र्य चेतना एवं आत्मगौरव के भाव उनमें व्याप्त हैं। निर्विवाद रूप से यह माना जा सकता है कि निराला ने युग चेतना के अनुरूप ही अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि विकसित की है।

महत्व, अवदान एवं हिन्दी साहित्य में स्थान

डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी के मतानुसार कवि निराला हमारी सांस्कृतिक परम्परा के उन्नायक रहे हैं। ..वे किसी एक वाद या धारा से जोड़े नहीं जा सकते। चाहे विवेकानन्द का नव्य वेदान्त हो या साम्यवादी जीवन-दर्शन, चाहे भारतीय संस्कृति की पारम्परिक दृष्टि का अनुगमन हो या नवीन पंथो की अधुनातन दृष्टि - वे हर पथ के पथिक तो नजर आते हैं। ..... अन्तत: यह कहा जा सकता है कि निराला का समग्र साहित्य 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', 'असतो मा सद्गमय' और 'मृत्योर्माऽमृतं गमय' मंत्रो की व्याख्या है।"

निराला क्रांतिकारी, स्वभावत: विद्रोही एवं नवीनता के आग्रही रचनाकार थे। उन्होंने हर दृष्टि छायावाद, प्रगतिवाद आदि वादों और अगल हटकर कविताएँ लिखते रहे। उन्होंने हर दृष्टि से प्रयोग किया। छन्दों में सर्वप्रथम उन्होंने ही क्रांति की, नवीन प्रयोग किए। शैली की दृष्टि से भी वे अन्य रचनाकारों से भिन्न और आगे रहे। भाषा, शैली, शब्द विन्यास, बिम्ब विधान, अलंकार, प्रयोग सब में उन्होंने नवीनता लाकर उसे समृद्ध किया।

हिन्दी साहित्य में निराला जी का एक विशिष्ट स्थान
है । निराला का साहित्य विश्व मानवता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
और मानव-मूल्यों का साहित्य है। उनके साहित्य में
छायावादी तथा प्रगतिवादी दोनों ही प्रवृत्तियों का समन्वय
देखा जा सकता है।

यदि उनके काव्य का तटस्थ विश्लेषण किया जाये तो
उसमें छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नयी कविता
की विशेषताओं को देखा जा सकता है।
निराला के काव्य में तत्व ज्ञान, रहस्यवाद तथा सामाजिक
चेतना का सुन्दर समावेश हुआ है।

निष्कर्ष

निराला हिन्दी में मुक्त छंद के लिये प्रसिद्ध है। वे स्थितियों के संश्लेषण से कम से कम से कम शब्दों द्वारा अधिक से अधिक भाव पक्ष प्रकट करते हैं। नाद-योजना का उनकी काव्यात्मकता में विशिष्ठ स्थान है। यही कारण है कि उनकी कविता में कभी कभी दुरूहता आ जाती है।

निराला में प्रारंभ से ही छायावाद से साथ-साथ सरल और बोलचाल की भाषा में जीवन के विषय-यथार्थ को अभिव्यक्त-करने की प्रवृत्ति रही है। यह महत्व निराला को ही प्राप्त है कि नई हिन्दी कविता की सभी प्रवृत्तियों के कवि अपना संबंध निराला से जोड़ने में गौरव का अनुभव करते है। उनकी अधिकांश रचनाओं में भाषा तत्सम बहुल है और उनमें समासो की अधिकता है। परंतु कुछ प्रगतिवादी रचनाऐं आम बोलचाल की भाषा में भी काव्यबद्ध हुई है। इससे यह तो पता चलता ही है कि भाषा के विविध रूपों पर उनका समान अधिकार था।

संदर्भ

इंटरनेट के निम्नलिखित वेबसाइट एवं लिंक जिसकी सहायता से मेरी परियोजना कार्य पूर्ण हो पाया है:-

1) https://www.hindi-kavita.com
2) https://targetnotes.com
3) https://www.advancedjournal.com

GOKHALE MEMORIAL GIRLS COLLEGE

14/15
Reda 5/7/22

NAME- RANI MALLICK

CLASS- 2nd SEM

SUBJECT- HINDI

PAPER- CC4

UNIVERSITY REGISTRATION - 013-1211-0026-21

UNIVERSITY ROLL NO - 212013-11-0012

COLLEGE ROLL NO- 21/BAH/0097

DEPARTMENT- HINDI

0 4 MAR 2023

Authenticated.
Principal
Gokhale Memorial Girls' College

Gokhale Memorial Girls' College
Kolkata

विषय सूची

क्र०सं०	विषय	पृ०सं०
01	जीवन परिचय	01
02	राष्ट्रीय चेतना	02-04
03	नारी दृष्टि	05-06
04	प्रकृति चित्रण	07
05	साहित्यिक परिचय	08-09
06	निष्कर्ष	10
07	सन्दर्भ	11

जयशंकर प्रसाद

जीवन परिचय

जयशंकर प्रसाद

जन्म - 30 जनवरी, 1889 ई०

मृत्यु - 14 जनवरी, 1937 ई०

पिता - देवीप्रसाद

माता - श्रीमती मुन्नी देवी

Authenticated.
Principal
Gokhale Memorial Girls' College
04 MAR 2023

जयशंकर प्रसाद जी का जन्म सन् 30 जनवरी 1889 ई० दिन गुरुवार को काशी के सरायगोवर्धन में हुआ था।
प्रसाद जी के किशोरावस्था के पूर्व ही माता और बड़े भाई का देहावसान हो जाने के कारण 17 वर्ष की उम्र में ही प्रसाद जी पर आपदाओं का पहाड़ ही टूट पड़ा। कच्ची गृहस्थी, घर में सहारे के रूप में केवल विधवा भाभी, कुटुंबियो, परिवार से संबद्ध अन्य लोगो का संपत्ति हड़पने का षड़यंत्र इन सबका सामना धीरता और गंभीरता के साथ किया। प्रसाद जी का प्रारंभिक शिक्षा काशी में क्वींस कालेज में हुई। किन्तु बाद में घर पर इनकी शिक्षा का व्यापक प्रबंध किया गया। जहाँ संस्कृत, हिन्दी, उर्दू तथा फारसी का अध्ययन इन्होंने किया। दीनबंधु ब्रह्मचारी जैसे विद्वान इनके संस्कृत के अध्यापक थे। इनके गुरुओं (रसमय सिद्ध) का भी चर्चा किया गया है।
घर के वातावरण के कारण साहित्य और कला के प्रति उनमे प्रारंभ से ही रुची थी। उन्होंने वेद, इतिहास, पुराण तथा साहित्य शास्त्र का अत्यंत गंभीर अध्ययन किया। इनकी मृत्यु सन् 19 नवम्बर 1937 में हुई थी।

राष्ट्रीय चेतना

प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं में अपने युग की राष्ट्रीय भावनाओं को प्रतिबिम्बित किया है।

"प्रेम पथिक" (1910) से "कामायनी" (1936) तक प्रसाद जी के रचनाकाल के अध्ययन से हम पाते हैं कि उनमें राष्ट्रीय चेतना और आधुनिक भावबोध कूट-कूट कर भरे हुए थे

"बात कुछ छिपी हुई है गहरी,
मधुर है स्रोत, मधुर है लहरी।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ "छायावाद" के स्वरूप को रेखांकित करती हैं प्रसाद जी को छायावाद का प्रवर्तक कहा जाता है। छायावाद को नवजागरण की अभिव्यक्ति कहा जाता है इस नवजागरण के पीछे राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना सक्रिय थी छायावाद का मूल उत्स भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में है जब लोगों में दासता के खिलाफ संघर्ष के भाव मुखरित हुए तो उनमें स्वाधीनता की चेतना जागी। इसी चेतना का परिणाम है - कल्पना पर अधिक बल। ध्यान देने वाली बात यह है कि हिन्दी कविता में छायावाद और भारतीय राजनीतिक मंच पर महात्मा गाँधी का आगमन एक साथ हुआ। तभी डॉ नगेन्द्र कहते हैं -

"जिन परिस्थितियों ने हमारे दर्शन और कर्म को अहिंसा की ओर प्रेरित किया, उन्होंने ही भाव-वृत्ति को छायावाद की ओर।"

प्रसाद जी के काव्य में हमें नवीन भावबोध के साथ स्वाधीनता की चेतना, सूक्ष्म कल्पना, लाक्षणिकता, नए प्रकार का सादृश्य-विधान, नया सौंदर्य बोध आदि के दर्शन होते हैं छायावादी काव्य में राष्ट्रीय जागरण, सांस्कृतिक जागरण के रूप में आता है नन्ददुलारे वाजपेयी ने आधुनिक साहित्य में कहा है, "केवल राष्ट्रीयता की भावना देश और समाज के सांस्कृतिक जीवन के बहुमुखी पहलुओं का स्पर्श नहीं करती और एक बड़ी सीमा तक एकांगी बनी रहती है।.... नवयुग के कवियों ने इस तथ्य को समझ लिया था और इसीलिए उनकी रचनाएं 'राष्ट्रीय' न रहकर अधिक राष्ट्रीय और सांस्कृतिक भूमियों पर पहुंची थी।"

प्रसाद जी की रचनाओं में कहीं भी भाव-स्थूलता का वर्णन नहीं है। इनमें अनुभूति का सूक्ष्म वर्णन है। वे स्वच्छंदतावादी भी थे हालांकि कुछ आलोचकों ने जब इन्हें "ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीरे-धीरे" लिखा था, पलायनवादी होने का आरोप लगाया। किंतु हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि प्रसाद जी की राष्ट्रीय चेतना और 'द्विवेदी कालीन' कवियों, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी की चेतना में अंतर है। उनकी राष्ट्रीय चेतना बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के 'विप्लव गान' और 'निराला' के 'जागो फिर एक बार' से भी भिन्न है। इनमें राष्ट्रीयता का स्वरूप स्थूल है. इनमें उद्बोधन है, विदेशी सत्ता से मुक्त होने का आह्वान है।

प्रसाद जी की राष्ट्रीय चेतना का स्वर प्रच्छन्न है. कोमल है, सौम्य है, सूक्ष्म है। यह सीमित अर्थ में राष्ट्रवाद नहीं है। यहां राष्ट्रीय जागरण ने सांस्कृतिक जागरण की अभिव्यक्ति 'प्रथम प्रभात', 'अब जागो जीवन के प्रभात

कविता विभाजी जाग री, आदि रचनाओं के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। प्रसाद जी की राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति शैली अभिधात्मक नहीं है, बल्कि यह अप्रत्यक्ष है, व्यंजना पर आधारित है - यह स्वच्छन्दतावाद की मूल चेतना से अभिन्न है -

अब जागो जीवन के प्रभात।
वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आंसू जो क्षोभ भरे
उषा बटोरती अरुण गात।

जहाँ प्रसाद जी सूक्ष्म, सांस्कृतिक और सौम्य हैं वहीं द्विवेदी युगीन काव्य स्थूल है। भाषा की विलक्षणता पर जोर देकर, आंतरिकता के स्पर्श और आधुनिक बोध और बदली हुई काव्य दृष्टि द्वारा वे मनुष्यों की मुक्ति को महत्व दे रहे थे। बंधनों से छुटकारा पाने को बल दे रहे थे। इस प्रकार से यह स्वाधीनता की चेतना को विकास का काम था। भारतेंदु युग में राष्ट्रीय आदर्शवाद अस्पष्ट और अमूर्त रूप में था। द्विवेदी युग में इतिवृत्तात्मकता और विवरणात्मकता प्रमुख हो गई, जो स्थूल कथन पर आश्रित थी।

इसी प्रकार "अशोक की चिंता" और "अरी ओ करुणा की शांत कछार" में भी राष्ट्र के प्रति गर्व गौरव की भावना अंकित किया गया है। कवि अशोक के नरसंहार के बाद हृदय परिवर्तन और बौद्ध - धर्म ग्रहण के माध्यम से यह बताना चाहता है कि राजा का धर्म है जनता की सेवा करना। कवि शांति का संदेश देते हुए कहता है कि विजय लोहे की नहीं होती, विजय आत्मा की होती है और वह प्रेम, शांति और मानवता से ही संभव है कवि राष्ट्रीय एकता का भी संदेश इस कविता के माध्यम से देता है।

Kolkata

नारी दृष्टि

जयशंकर प्रसाद की मान्यता है की नारी वास्तविक रूप भावना, कोमलता, परोपकार तथा श्रद्धा जैसे गुणों से मिलकर बनता है। जिस नारी में ये सभी गुण मौजूद हो, उसकी महानता पर वे मुग्ध नजर आते है «स्कंदगुप्त» में भी ऐसे कई नारी चरित्र है जो इन गुणों का समग्र या आंशिक प्रतिनिधित्व करते है।

प्रसाद उस संक्रमण काल के लेखक है जब नारी पहली बार घर से बाहर निकलकर स्वाधीनता संग्राम जैसे वृहद दायित्वों को निभा रही थी और पुरुष उनके नए रूप को देखकर अचंभित था। इसीलिए नारी को लेकर उनके दृष्टिकोण में एक ऊहापोह की स्थिति विद्यमान है प्रसाद की «कामायनी», जैसे - महाकाव्य «चंद्रगुप्त» और «स्कंदगुप्त» नाटकों में उनकी नारी चेतना साफ तौर पर झलकती है।

प्रसाद की मान्यता है की «देवसेना» में सभी सभी गुणों से युक्त है मुख्यतः त्याग व राष्ट्रप्रेम की भावना उसमे प्रखर है उदाहरण के लिए उसका कथन है - «मानव का पतन तो रहेगा ही, उसका उद्देश्य भी सफल होना चाहिए। आपको अकर्मण्य बनाने के लिए देवसेना जीवित नहीं रहेगी»।

इसके अलावा देवकी का क्षमा का गुण, कमला का देश के कल्याण के लिए पुत्र मोह का त्याग, रामा का किसी भी लालच के सामने न झुकने की ताकत का गुण आदि भी प्रसाद की नारी दृष्टि के द्योतक है।

प्रसाद के साहित्य में नारी चरित्र की महानता मिलती है किन्तु कथानक की दृष्टि से उनका स्वतंत्र महत्व कम है यद्यपि 'कामायनी' और 'ध्रुवस्वामिनी' जैसी रचनाओं का नामकरण भी नायिका केन्द्रित है तब भी साधारणतः उनके नारी चरित्र पुरुष नायक के सहयोगी बनकर ही आते हैं लेकिन 'स्कन्दगुप्त' इस दृष्टि से एक बेहतर अपवाद है क्योंकि इसमें देवसेना का महत्व बहुत ज्यादा है।

'स्कंदगुप्त' के नारी-चरित्रों में एक वर्ग बुरे चरित्रों का भी है। प्रसाद उन नारियों को अच्छा मानते जो नैतिक मूल्यों से समझौता करती है, स्वार्थ या लालच के कारण अपनी प्रतिबद्धताओं को भूल जाती है। 'विजया' और 'अनंत देवी' ऐसी ही कमजोर पात्र है, जहाँ वह विजया को व्यभिचारी चरित्र के लिये उससे आत्महत्या कराते हैं, वही उन्होंने अनंत देवी के नैतिक मूल्यों से विचलन के बाद उसका हृदय परिवर्तन कराया है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्कंदगुप्त के नारी पात्रों की विशेषता स्पष्ट होती है। हालाँकि प्रसाद की नारी दृष्टि प्रगतिशील आलोचकों को खटकती रही है किन्तु प्रसाद ने अपने नाटकों में नारियों को तुलनात्मक रूप में ज्यादा स्वतंत्रता प्रदान की है। उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है कि देवसेना का अंतिम निर्णय किसी बाध्यता का नहीं बल्कि उसकी स्वतंत्र वैचारिकता का प्रमाण है।

प्रकृति चित्रण

Gokhale Memorial ... Kolkata

छायावादी कवियो के लिए प्रकृति साधन है छायावादी काव्य में प्रकृति मानव में ही किन्ही भावो का साधन है। प्रसाद जी की प्रकृति, चेतना सम्पन्न है। कामायनी के आरम्भ में कवि ने मानवीय भावो की परिव्याप्ति में किस प्रकार मिलाया है इसका प्रमाण है। चिन्ता सर्ग की ये पंक्तियां :

"दूर दूर तक विस्तृत था हिम स्तब्ध उसी के हृदय के समान
नीरवता - सी शिला चरण से टकराता फिरता पवमान।
तरुण तापसी - सा वह बैठा साधन करता सुर श्मशान नीचे
प्रलय - सिंधु - लहरो का होता था सकरुण अवसान।
उसी तपस्वी से लम्बे थे देवदारु दो चार खड़े हुए हिम
धवल जैसे पत्थर बन कर ठिठुरे रहे अड़े।"

संक्षेप में देखा जाए तो प्रकृति - सौंदर्य का चित्रण करते हुए प्रकृति के प्रति एक असीम श्रद्धा और विस्मय की भावना छायावादी काव्य में प्राप्त है। देखना चाहिए कि "इस समय में भारतीय जीवन प्राय: नवीन वैज्ञानिक संस्कृति के गुणो, अवगुणो से सामान्यता इतना परिचित नही थे। प्रकृति की गोद में मानवीय जीवन आनन्दमुक्त थे! यंत्रवाद की कठोरता उसे स्पर्श नही की थी। इसीलिए प्रकृति का कलात्मक, सुन्दर, मनोरम एंव सम्पूर्ण चित्र इस काल की रचनाओं में परिलक्षित है

साहित्यिक परिचय

Kolkata

आधुनिक हिन्दी साहित्य जब विकास हो रहा था उस समय जयशंकर प्रसाद का जन्म साल 1890 में काशी में हुआ था। महज 9 साल की अवस्था से ही लेखन में रमे जयशंकर प्रसाद ने भी अपनी जीवन पीड़ा का आलम्बन लेकर तमाम दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक काव्य रचे। हालांकि प्रसाद के परिवार को उनका लिखना पसंद नहीं आता था। इसलिए जयशंकर कलाधर हो जाते हैं और इसी नाम से लेखन जारी रहता है साल 1918 में प्रसाद की पहली रचना 'चित्राधार' प्रकाशित हुई। इसमें उनकी ब्रज कविताएं शामिल हैं। हिन्दी साहित्य में उनके पूर्ववर्ती भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिन्दी गद्य को खड़ी बोली से समृद्ध तो किया लेकिन पद्य में वह ब्रज भाषा लेखन के रूप से नहीं उबर पाए थे। बहुत लम्बे समय तक हिन्दी खड़ी-बोली का हिन्दी काव्य से साक्षात्कार नहीं हुआ था। हिन्दी का यह इंतजार तब खत्म हुआ जब जयशंकर प्रसाद ने 'आँसू' लिखी। इसे हिन्दी पद्य साहित्य का पहला ऐसा काव्य संग्रह माना जाता है जो खड़ी-बोली हिन्दी में लिखी गई है।

'कामायनी' तकरीबन 48 साल जीने वाले जयशंकर प्रसाद का आखिरी महाकाव्य है इसे जयशंकर प्रसाद की उपलब्धि से ज्यादा हिन्दी साहित्य की उपलब्धि के लिए जाना-बताया जाए तो इसमें किसी को भी कोई आपत्ति नहीं होगी। हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छांह, एक पुरुष, भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।

छायावाद की समग्र प्रवृत्तियाँ प्रसाद की कामायनी में सम्पूर्ण रूप से विद्यमान है यही कारण आप निराला में छायावाद के प्रतीक-चिह्नों की खोज करेंगे तब आपको उनका समूचा साहित्य उलटना पड़ेगा। यही छायावाद के अन्य स्तंभ-लेखकों के साथ भी है। महान विद्वान जयशंकर प्रसाद में बुद्ध का अंश देखते हैं जीवन में इतने प्रिय लोगों का अकाल दुनिया छोड़कर चले जाना प्रसाद को मृत्यु-व्यथा के प्रश्नों की ओर लेकर जाता है इन्हीं सवालों के जवाब में 'आँसू' और 'झरना' की सृष्टि हुई है।

इस करुणा कलित हृदय में एक विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती।

प्रसाद घोर आधुनिक कवि हैं उनकी रचनाओं में आधुनिक प्रश्नों के जवाब तलाशने और सामाजिक वैषम्य पर सवाल उठाने की घटनाएँ विशेष रूप से मिलेंगी। बौद्ध दर्शन की ओर झुके प्रसाद ने बुद्धकालीन चरित्रों से दो चीजें सीखी। पहली तो अहिंसा और करुणा भाव। दूसरा स्त्री-सम्मान। प्रसाद ने तत्कालिक सामाजिक परिस्थितियों को आधार सामाजिक परिस्थितियों का आधार मानकर स्त्री विषयक आधुनिक सवाल उठाकर स्वयं की दूरदर्शिता का परिचय भी दिया है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो

प्रसाद की रचनाओं में घोर दार्शनिक तत्वों का समावेश है लेकिन इससे वह अपने युग की प्रगतिशील चेतना से दूर नहीं हुआ। उनकी कहानियों में उत्थानमूलक प्रसंगों की प्रचुरता है।

निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद हिन्दी कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार तथा निबन्धकार थे। वे हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं में अपने युग की राष्ट्रीय भावनाओं को दर्शाया है इस नाटककारता के पीछे राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना सक्रिय थी। इनकी रचनाओं में कहीं भी भाव-स्थूलता का वर्णन नहीं है। यहाँ अनुभूति का सूक्ष्म वर्णन है प्रसाद इस संक्रमण काल के लेखक हैं वे अपने साहित्य में नारी चरित्र की महानता अंकित करवाया है "कामायनी" के प्रारम्भ में कवि ने मानवीय भावों की परिव्याप्ति में किस प्रकार दिखाया है इसका प्रमाण है चिन्ता सर्ग की ये पंक्तियां में प्रस्तुत किया है संस्कृति के गुणों, अवगुणों से सामान्यता उतना परिचित नहीं थे।

Memorial Girls' Co... Kolkata

सन्दर्भ

rasha-hindi.blogspot.com

https-//www.hindijournal.com

Gokhale Memorial Girls College Kolkata

GOKHALE MEMORIAL GIRLS COLLEGE

NAME - CHANDNI SHAW

SEM - 2nd SEM

SUBJECT - HINDI

DEPARTMENT - HINDI (HINA)

PAPER - CC 2.4

YEAR - (1st) YEAR

COLLEGE ROLL No. - 21/BAH/0156

UNIVERSITY ROLL No - 212013-11-0055-21

UNIVERSITY REGERTRATION No. - 013-1211-0055-21

DATE -

TIME -

14/15

Authenticated
Principal
Gokhale Memorial Girls' College

Gokhale Memorial Girls' College Kolkata

04 MAR 2023

विषय - सूची

क्रम संख्या	विषय शीर्षक	पृष्ठ संख्या	Remark
1)	कबीर दास का जीवन परिचय	1.	
2.)	कबीर का समाज दर्शन	2.	
3.)	कबीर दास की मुख्य रचनाएं	3.4	
4)	कबीर की क्रांती चेतना	5.6	
5.)	कबीर की भाषा शैली	7	
6.)	निष्कर्ष	8.	

Gokhale Memorial Girls' College
Kolkata

कबीर दास का जीवन परिचय

04 MAR 2023

Authenticated
Principal
Gokhale Memorial Girls' College

उनका पुरा नाम संत कबीर दास था। कबीर का जन्म सन् 1398 (लगभग) हुआ। उनकी जन्म भूमि लहरतारा ताल, काशी है। कबीर के जन्म स्थान में के संबंध तीन मत हैं: मगहर, काशी और आजमगढ़ के बेलहरा गाँव। उनके कबीर के माता पिता के नाम "नीमा" और "नीरू" थी, कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे- अपनी अवस्था के बालकों से एकदम भिन्न थे। उनके कुछ पदों से यह अंदेशा लगाया जाता है की वे जुलाहा जाति के थे। कबीर ने शिक्षा ग्रहण नहीं की थी इसलिए उन्होंने स्वंय ग्रंथ नहीं लिखे, मुँह से बोले और उनके शिष्यों ने उसे लिख दिया। कबीर के गुरु रामानन्द थे। कबीर की भाषा पंचमेल खिचड़ी अवधी, सधुक्कड़ी थी। उनकी मुख्य तीन रचनाएं हैं साखी, सबद और रमैनी। कबीर ने काशी के पास मगहर मे देह त्याग दी। ऐसी मान्यता है कि उनके मृत्यु के बाद उनके शव को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया था। हिन्दू कहते थे उनका अंतिम संस्कार हिंदु रीति से होना चाहिए और मुस्लिम कहते थे। मुस्लिम रिती से, जन्म की भाँति इनकी मृत्यु तिथि पर भी मतभेद है किन्तु अधिकतर विद्वान उनकी मृत्यु संवत 1575 विक्रमी (सन् 1518) ई. मानते हैं।

Gokhale Memorial Girls' College Kolkata

कबीर दास जी की मुख्य रचनाएं (ग्रंथ) –

कबीर दास जी द्वारा लिखी गई ज्यादातर किताबे दोहा और गीतों का एक विशाल संग्रह था, जिसकी संख्या 72 थी।
उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाओं में कबीर बीजक, सुखनिधन, होली अगम, शब्द, वसंत, साखी और रक्त शामिल हैं।
हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि कबीरदास जी ने अपनी रचनाओ मे को बेहद सरल और आसान भाषा मे लिखा है, उन्होने अपनी कृतियों में बेबाकी से धर्म, संस्कृति एवं जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी राय दी है। उनकी रचनाओ मे उनकी सहजता का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से भी लोगो को संसार का नियम एवं जीवन जीने का तरीके के बारे मे बताया मे जो कि अतुलनीय है और अद्भुत है।

कबीर की साखि – इसमें ज्यादातर कबीर दास जी की शिक्षाओं और सिद्धांतो का उल्लेख मिलता है।

सबद – कबीर दास जी की यह सर्वोत्तम रचनाओं मे एक है, इसमे उन्होने अपने प्रेम और अंतरंग साधाना का वर्णन खूबसूरती से कीया है।

रमैनी – इसमें कबीरदास जी ने अपने कुछ दार्शनिक एवं रहस्य वादी विचारो की ~~संख्या~~ व्याख्या की है। वहीं उन्होने इस रचना को चौपाई छंद मे लिखा है।

Gokhale Memorial Girls College
Kolkata

Memorial
Kolkata

कबीर का समाज दर्शन व सामाजिक चेतना :

कबीर का प्रादुर्भाव ऐसे समाज मे हुआ जब समाज अनेक बुराइयो से ग्रस्त था। छुआछूत, अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता, मिथ्याचार, पाखण्ड, का बोलबाला था। और हिन्दू-मुसलमान आपस मे झगरते रहते थे। धार्मिक पाखण्ड अपनी चरम सीमा पर था।

कबीर ने विभिन्न क्षेत्रो में समाज सुधार का स्तुत्य प्रयास किया। उनके द्वारा किये गये इस प्रयास को निम्न शीर्षको मे समझाया जा सकता है :

राम-रहीम की एकता का प्रतिपादन — कबीर चाहते थे की हिन्दू-मुसलमान प्रेम एवं भाईचारे की भावना से एक साथ मिलकर रहे। उन्होंने राम और रहीम की एकता स्थापित करते हुए बताया है की ईश्वर दो नहीं हो सकते। वह तो लोगो का भ्रम है जो खुदा को परमात्मा से अलग मानते हैं -

"दुइ जग हौ जगदिश कहा ते आया,
कहु कौने भरमिया"

मुसलमानो के भाति उन्होंने मुर्ति पुजा का खण्डन किया और एकेश्वरवाद को मान्यता दी और अवतारवाद का भी विरोध किया। वे कहते है की राम दशरथ पुत्र नहोकर निर्गुण, निराकार रूप है। -

जाति प्रथा का खण्डन – कबीर भक्त और कवि बाद मे है और समाज सुधारक पहले है उनकी कविता का उद्देश्य जनता को सही उद्देश्य देना और सही रास्ता दिखाना है उन्होने जो गलत समझा उसका निर्भिकता से खंडन किया अनुभूति की इमानदारी, अभिव्यक्ति की सच्चाइ कबीर की सबसे बड़ी विशेषता है, कबीर ने समाज मे व्याप्त जाति प्रथा छुआछुत एवं उन्च निच की भावना पर प्रहार किया और कहा की जन्म के आधार पर कोइ ऊंच-नीच नही होता उंचा वह है जिसके कर्म अच्छे है –

- ऊंचे कुल को जनमया करनी ऊंच न होय
- सुबरन कलश सुरा भरा साधु निंदत सोय

Memorial Girls' College Kolkata

अगर ब्राह्मण अपने को उंचा समझते है तो ये उनकी भुल है चाहे ब्राह्मण हो या सुद्र दोनो ही इस पृथ्वी पर माँ के पेट से जन्म लेते है तो उनमे जातिगत असमानता क्यो मानी जाय कबीर जन्म को नही बल्की कर्म को उचा और सही मानते है।

मुर्ति पुजा का विरोध – कबीर ने समाज मे व्याप्त मुर्ति पुजा का डटकर विरोध किया है वो सामान्य जनता को समझाते हुए कहा है की मुर्ति पुजा से भगवान नही मिलते इससे तो अच्छा है की घर की चाकी को पुजा जाय

- पाहन पुजै हरि मिलै तो मैं पुजु पहाड़
- घर की चाकी कोई न पुजै पिस खात इंसान

कबीर दुनिया के मुर्ति पुजा के पागलपन पर प्रहार करते है और कहते है की मुर्ति पुजा से भगवान नही मिलते इसलिए इन मुर्तियो को छोड़ कर हमें कर्म की पुजा करे। अच्छा हो की तुम उस चाकी की पुजा करो जिसका पिसा आटा से तुम्हारा पेट भरता है।

जीवहिंसा का विरोध : कबीर ने धर्म के नाम पर व्याप्त हिंसा का विरोध किया है हिन्दुओ मे सावतो और मुसलमानो मे कुर्बानी का निर्भिकता से फटकारा और कहा की दिन मे रोजा रखने वाले रात को जीव हत्या करते है इस कार्य से भला खुदा कैसे प्रसन्न हो सकता है कबीर कहते है —

• दिन मे रोजा रखत है राति हनत है गाय
• यह तो वह बंदिगी कैसे खुशी खुदाय

जीवहिंसा के विरोधी कबिर कहते है लोगो को यह देखकर सबक लेना चाहिए की बकरी तो केवल घास - पात खाती है और इस पाप के कारण उसकी चमड़ी खिची जाती है किन्तु जो व्यक्ति बकरी को खाते है उनकी क्या दशा होगी, कबीर कहते है -

• बकरी पाति खात है ताकी खि काढ़ि खाल
• जै नर बकरी खात है ताको कौन हवाल

हिन्दु-मुस्लिम पाखण्ड का खण्डन - कबीर ने हिन्दु और मुसलमान दोनो पाखण्डो पर प्रहार करते है — एक ओर हिन्दुओ के तिर्थाटन, छापा, तिलक का विरोध करते है, तो दुसरी ओर रोजा, नमाज, अजान का विरोध करते हुए कहते है की माला फेरने से नही मन की शुद्दि से इश्वर प्राप्त होते है -

• माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर
• कर का मन का डारि कै मन का मन का फेर

• कबीर की क्रांति चेतना (विद्रोह भावना)

कबीर प्रगतिशील चेतना से युक्त एक विद्रोही कवि थे। उनका व्यक्तित्व क्रांतिकारी था। धर्म और समाज के क्षेत्र में व्याप्त पाखण्ड, कुरीतियां, रुढीयो एवं अन्धविश्वासों की उन्होने मुखर आलोचना की और ऊंच-नीच, छुआछूत जैसे-सामाजिक कोढ़ को दुर करने के लिए भरसक प्रयास कीया।

कबीर लीक कर छोड़कर चलने वाले ऐसे कवि थे जिन्होनें समाज मे व्याप्त विसंगतियो, मिथ्याचारो, एवं अनीतिपुर्ण आचरण पर खुलकर प्रहार कीया, उन्हे जो ठीक लगा उसे कहने मे कोइ संकोच नही किया। वस्तुत: वे जन्म से विद्रोही, प्रकृति से समाज सुधारक एवं हृदय से लोक कल्याण के आकांक्षी महामानव थे। उनके व्यक्तित्व का पूरा प्रतिबिम्ब उनके साहित्य मे विद्यमान है। वे अनुभवजन्य सत्य पर विश्वास करते है न कि शास्त्रोक्त बातों पर। शास्त्र के पण्डित को वे चुनौती देते हुए कहते हैं —

Memorial Girls ... Kota (stamp)

तू कहता कागद की लेखी मैं कहता आँखन की देखी।
मैं कहता सुरझावन हारी, तू राखा उरझाय रे।

यदि तू ब्राह्मण पुत्र है, तो किसी अन्य प्रकार से तेरा जन्म क्यों नहीं हुआ और यदि तू तुर्क है तो माँ के पेट के भीतर ही 'सुन्नत' क्यों न करा ली?

जो तू बाँभनी जाया, आन बाट है क्यों नहीं आया?
जो तू तुरक तुरकिनी जाया, भीतर खतना क्यों न कराया?

समूचा मध्यकाल अन्धविश्वास, रूढ़ियाँ, पाखण्ड एवं बाह्याडम्बर में जकड़ा हुआ था। मुल्ला और पण्डित भोली-भाली जनता को बहला कर धार्मिक उन्माद उत्पन्न करते थे और उससे अपना स्वार्थ साधते थे। कबीर यह अच्छी तरह जानते थे, इसलिए उन्होंने जनता को साफ-साफ शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा —

हिन्दू-तुरक की एक राह है सद्गुरु यहै बताई।

कबीर का व्यक्तित्व क्रान्तिदर्शी था, उन्होंने बाह्याडम्बरों के विरुद्ध हल्ला बोल दिया और ऊँच-नीच तथा जाति-पाँति के भेदों को नकारते हुए अपने विद्रोही स्वर में घोषणा की —

कबिरा खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ।
जो घर बाले आपना सो चले हमारे साथ॥

वे कहते हैं- बाह्याचारों में क्या रखा है? हिन्दू अपने देवताओं को पूज-पूज कर मर गए, मुसलमान हज करके मर गये, योगी जटाएं बांध-बांध कर मर गये पर ईश्वर को इनमें से कोई प्राप्त नहीं कर सका —

देव पूजि पूजि हिन्दू मुए, तुरक मुए हज जाई।
जटा बांधि-बांधि योगी मुए, इनमें किन हूं न पाई॥

Gokhale Memorial Girls' College Kolkata

कबीर की भाषा-शैली -

कबीरदास जन-सामान्य के कवि थे, अत: उन्होंने सीधी सरल-भाषा
को अपनाया है। उनकी भाषा मे अनेक भाषाओं के शब्द खड़ी बोली, पू
र्वी हिन्दी, राजस्थानी, पंजाबी, ब्रज, अवधी आदि के प्रयुक्त हुए है, अत
पंचमेल खिचड़ी' अथवा 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा जाता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे 'सधुक्कड़ी' नाम दिया है। उन्होंने अपनी रचनाओं
मे दोहा-चौपाई और पद-शैली का अधिक प्रयोग किया है।

काव्य को प्रभावशाली बनाने वाले कुछ अलंकार कबीर के काव्य में अनायास
आ गये है, जैसे- अनुप्रास, रूपक, उपमा, दृष्टांत आदि।

कबीर दास ने बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग किया है। भाषा पर कबीर
का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने
जिस रूप मे प्रकट करना चाहा है उसे उसी रूप मे कहलवाया है। भाषा
कुछ कबीर के सामने लाचार-सी नजर आती है। वाणी के ऐसे बादशाह को
साहित्य-रसिक काव्यानंद का आस्वादन कराने वाला समझे तो उन्हे दोष
नहीं दीया जा सकता। फिर व्यंग्य करने में और चुटकी लेने भी कबीर-
प्रतिद्वन्दी नहीं जानते। पंडित और काजी, अवधु और जोगिया, मुल्ला और
मौलवी-सभी उनके व्यंग्य से तिलमिला जाते थे। अत्यन्त सीधी भाषा मे वे
ऐसी चोट करते हैं कि खानेवाला केवल धूल झाड़ के चल देने के सिवा औ
र कोई रास्ता नहीं पाता। कबीर ने शास्त्रीय भाषा का अध्ययन नहीं किया था,
पर फिर भी उनकी भाषा में परम्परा से चली आइ विशेषताएँ वर्तमान है।
"कबीर की वाणी का अनुकरण नहीं हो सकता। अनुकरण करने की सभी चे
-ष्टाएँ व्यर्थ सिद्ध हुई है। इसी व्यक्तित्व के कारण कबीर उक्तियाँ श्रोता को -
बलपूर्वक आकृष्ट करती है। इसी व्यक्तित्व के ~~कारण~~ आकर्षण के कारण सहृदय
समालोचक सम्भाल नहीं पाता है।"

Memorial Girls' College Kolkata

कबिर दास जी का निष्कर्ष —

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि कबीर एक सच्चे समाज सुधारक थे। उनका मार्ग सत्य का मार्ग था। वे ढोंग तथा अन्धविश्वास को समाप्त करना चाहते थे। कबिर नैतिक मूल्यों के पक्षधर ऐसे सन्त कवि थे, जो जनता के पथ-प्रथर्दक कहे जा सकते हैं। कबीर दास जी हमारे हिंदी साहित्य के एक जाने माने महान कवि होने के साथ ही एक समाज सुधारक भी थे. उन्होंने समाज में हो रहे अत्याचारो और कुरीतिओं को खत्म करने की बहुत कोशिश की, जिसके लिए उन्हें समाज से बहिष्कृत भी होना पड़ा, परन्तु वे अपने शब्दो में अडिग रहे।

Gokhale Memorial Girls' College
Kolkata

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

① https://bharatdiscovery.org> india
② gyanipandit.com
③ https://www.zigya.com>
④ https://bharatdiscovery.org

Gokhale Memorial Girls' College * Kolkata